RAMRAJYA PAR MAHRSHI BALMIKI, WYAS MUNI EVAM GOSWAMI TULSIDAS KE BHAVON KA SPASHTIKARAN – EK PORADHIK ADHYAYAN

1. Smt. Anita Jadon (Reserch Scolar) Hindi Dett. Rajkiya Mahila Mahavidyalay, Sirsaganj Firozabad Uttar Pradesh.
2. Dr. Bhagwat Swaroop (Associate Pro. & Head Of The Deptt. Hindi) Rajkiya Mahila Mahavidyalay, Sirsaganj Firozabad Uttar Pradesh.

सारांश– प्रस्तुत लेख में शोधार्थिनी द्वारा राम के जन्म और दशरथ की भूमिका, कौशल्या का प्यार और कैकेयी के चरित्र का वर्णन किया किया है । राम के वनगमन और विभिन्न आपदाओं में दृड़ निश्चय राम के चरित्र को अडिग बनाते हैं किसी भी कीमत पर उत्तम पुत्र का कर्तव्य राम के माध्यम प्रस्तुत किया है । शूपनखॉ के चरित्र तथा खर एवं दूषण का वध , लका के राजा रावण का वध तत्पश्चात् राम राज्य की स्थापना जोकि 10हजार वर्षों तक दीर्घ शासन का विस्तार से विवेचन प्रस्तुत किया गया है । राजा के जनपरायण होने पर राज्य की समृद्धि और राज्य का विकास प्रदर्शित किया गया है । महर्षि बाल्मीकि, व्यासमुनि, तथा गोस्वामी तुलसी दास ने अपनी रामायण में राम के चरित्र चित्रण का विवेचन , अध्ययन लेख की विशेषता है।

प्रासंगिकता – प्रस्तुत लेख में शोधार्थिनी द्वारा पौराणिक कथा रामकथा के माध्यम से वर्तमान समय में शासकों को तथा लोक को शिक्षा प्रदान करना है कि राजा कर्तव्य परायण होगा तो राज्य की जनता भी लोक परायण होगी साथ ही राजा उच्च चरित्र बल का धनी होगा तो देश की जनता समृद्ध और और धनधान्य से पूर्ण होगी। देश में विकराल दैवी एवं प्राकृतिक आपदा का आना संभव नहीं होगा।

प्रस्तावना :– प्रस्तुत लेख में शोधार्थिनी ने पौराणिक राम कथा का अध्ययन प्रस्तुत किया है । लेख में एक ऐसे राज्य जिसे राजराज्य की संज्ञा दी जाती है ऐसे रामराज्य में व्यक्ति की स्ववंत्रता , बंधुता एवं कर्तव्य परायणता का विवेचन भी प्रस्तुत किया गया है । रामराज्य की उन विशेषताओं में जिनमें राम के आदर्श मर्यादास से राज्य की सुख समृद्ध का प्रस्ततीकरण किया गया है । साथ ही वाल्मीकि रामाण में वर्णित रामराज्य, व्यासमुनि द्वारा वर्णित राम राज्य और गोस्वामी तुलसी दास द्वारा रामराज्य का विवेचन भी प्रस्तुत लेख में विवेचन अध्ययन किया गया है । राम वनगमन , शूपणखॉ का चरित्र एवं लंका के महावली राजा रावण का वध तत्पश्चात राम राज्य की स्थापना और लम्बे समय तक राजा और प्रजा के आनंन्द का वर्णन है लेख की मौलिकता का ध्यान भी रखा गया है।

रामराज्य का अभिप्राय :– रामराज्य का अभिप्राय है कि प्रजा में धर्म को जानने वाले तथा पालन करने वाले प्राणी हों, क्योंकि धर्म की रक्षा के लिए राष्ट्र का निर्माण होता है। इसी धर्म की रक्षा के लिए महर्षि वाल्मीकि ने रामायण में रामराज्य की स्थापना की, महर्षि व्यास ने अध्यात्म रामायण में रामराज्य की स्थापना की तथा गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरित मानस में रामराज्य की स्थापना की है।

रामवन गमन :– रामवन गमन की कथा में महराज दशरथ के यहां राम का पुत्र के रूप में अवतरित होना और वनगमन अनेक तथ्यों से जुड़ा हुआ है। इसके अतिरिक्त विष्णु के नर रूप में अवतार लेने के का मुख्य कारण यह भी था, कि रावण ने ब्रहमाजी से वरदान प्राप्त किया था कि बानर और मनुज को छोड़कर मैं किसी हाथों न मारा जाऊॅ। इस लिए रावण का वध करने के लिए विष्णु को नर रूप में अवतरित होना आवश्यक था मानस में तुलसी ने कहा है–

करि विनती गहि पद दससीसा, बोलेउ वचन सुनहु जगदीसा।

हम काहू के भरि न मारे, वानर मनुज जाति दुइवारें। [1]

अर्थात् मैं वानर और मनुज को छोड़कर किसी के हाथों न मारा जाऊॅ। इसलिए विष्णु ने नर लीला करने के लिए राजा दशरथ के यहॉ पुत्र के रूप में अपनी सभी शक्तियों राम, भरत, शत्रुघ्न के साथ प्रकट होने के लिए कैकेयी माध्यम बनाया।

गोस्वामी तुलसीदास ने अपने काव्य 'मानस' में सब जगह मर्यादा को प्रधानता दी है अतः भगवान राम ने माता –पिता आज्ञापालन करने हेतु मर्यादा में रहते हुए प्रातः काल होते ही कैकेयी की आज्ञानुसार राजसी वस्त्र उतारकर बल्कल वस्त्र धारण कर सीता और लक्ष्मण के सहित वन को प्रस्थान किया।

सभी पुरवासी राम के रथ के पीछे दौड़ते चले आ रहे थे। राम महल अन्तर्नाद से भर गया। राजा दशरथ माता कौसल्या को रथ के पीछे आते देखकर राम ने सुमन्त को तीव्रगति से रथ चलाने की आज्ञा दी दश्रथ रथ को अन्तिम समय निहारते रहे और ऑखों से ओझल होते ही दशरथ पृथ्वी पर गिर पड़े। सुमन्त ने राम से कहा कि मैं तो तुम्हें केवल मार्ग दिखाने आया हूॅ अब तुम वापिस अयोध्या चलो किन्तु राम ने सुमन्त

से न लौटने की बात कही और कहा कि माता –पिता की आज्ञा पालन करने में मुझे कोई संकोच नहीं है। मेर लिए राष्ट्र का वैभव , पर्वतों की शैय्या दोनों समान हैं अब मैं भील, कोल, द्रविड़ को अपनाकर उन्हीं के साथ जीवन व्यतीत करूँगा।

तमसा नदी पर पहुँचकर सुमन्त ने रथ को रोक दिया। राम ने वनवास की पहली रात वहीं व्यतीत की। प्रातः काल सूर्योदय से पहले रथ पर बैठकर आये नगर वासियों को सोता छोड़कर कौशल पुर की सीमा को पार करते हुए श्रंगवेर पहुँचे जहॉ उनकी भेंट निषादराज से हुई एक रात वहां व्यतीत कर सुमन्त को यह कहकर वापस लौटा दिया कि आगे की यात्रा हम पैदल तय करेंगे। राम ने निषाद राज से नाव लाने के लिए कहा नाव से गंगा पार कर राम और लक्ष्मण तथा सीता प्रयाग पहुँचे। एक रात वहां बिताकर भरद्वाज आश्रम जा पहुँचे। महर्षि को देखते ही उन्होंने प्रणाम किया राम ने महर्षि को अपना परिचय दिया। भरद्वाज आश्रम में एक रात बिताने के बाद वे चित्रकूट जा पहुँचे।

महर्षि वाल्मीकि के आश्रम में पहुँचने पर उन्हीं की मंत्रणा द्वारा एक पर्ण कुटी तैयार की गई। कुटी में प्रवेश करने के बाद मन्दाकिनी नदी का दर्शन कर राम अगस्त्य मुनि के आश्रम पहुँचे। अगस्त्य मुनि के द्वारा उन्हें अनेक प्रकार के दिव्यास्त्र प्राप्त हुए और उन्हीं के बताने पर पंचवटी पहुँचे और पर्ण कुटी बनाकर रहने लगे।

एक दिन सुबह श्री राम और लक्ष्मण एवं सीता गोदावरी में स्नान करके कुटिया पर लौट आये तो अकस्मात रावण की बहन राक्षसी शूपणखॉ वहां पहुंच गयी । शूपणखॉ द्वारा दोनों भाइयों के सम्मुख विवाह का प्रस्ताव रखना और दोनों भाइयों राम और लक्ष्मण द्वारा प्रस्ताव ठुकरा देने पर शूपणखॉ सीता पर झपटी। राम का इशारा पाकर लक्ष्मण ने तलवार से शूपणखॉ के नाक , कान काट लिये। वह रोती हुई अपने भाई खर के पास पहुँची खर और दूषण ने मिलकर राम और लक्ष्मण पर आक्रमण कर दिया । राम ने अपने वाण को कान तक खींचकर छोड़ा और खर और दूषण पर प्रहार किया । यही राम वनगमन की कथा का पूर्ण होती है।[2] यहीं तक वाल्मीकि जी ने अपनी रामायण में इस कथा का वृतान्त प्रस्तु किया है।

वाल्मीकि रामायण के अनुसार लंका के राजा रावण का परिचय :– लंका का राजा रावण महाबलबान था और भौतिक विज्ञान का पण्डित था । वह ब्रहमा तथा शिव का भक्त था और उन्हीं के द्वारा उसे महान शक्तियां वरदान रूप में प्राप्त हुईं थीं। उसके पुत्र तथा परिवार की संख्या अधिक थी, और वे सब भौतिक विज्ञान में एक –दूसरे से आगे थे। उन्होंने भी रावण की तरह से ही अनेक भौतिक शक्तियां देवताओं से प्राप्त की थी। इसलिए अपने आपको इन्द्रजीत या जगजीत के नाम से घोषित करते थे। रावण के एक भाई का नाम कुम्भकर्ण था वह अपनी प्रयोगशाला में छः महीने तक खोज करता था, और बाकी छः महीने में खोज पर अनुसंधान किया करता था, वह बहुत शक्तिशाली था, लेकिन मांस , मदिरा के प्रयोग से उसकी बुद्धिता नष्ट हो गयी थी।

वाल्मीकि रामायण और रामराज्य :– शोधार्थिनी ने कथा विस्तार रूप में होने के कारण उसे संक्षेप में प्रस्तुत लेख प्रदर्शित किया है ताकि शोधार्थिनी लेख में वे सब बातें जो मूल कारणों को प्रदर्शित किया है। लंका विजय के बाद विभीषण को लंका का राजा बनाया गया । चौदह वर्ष के बाद सीता तथा लक्ष्मण के साथ अपनी पुरी अयोध्या में प्रवेश किया। वह भरत जी, महर्षि वशिष्ठजी , महर्षि विश्वामित्र सभी माताओं एवं प्रजाजनों से मिले और राज्याभिषेक के बाद रामराज्य की स्थापना की जिसका वर्णन महर्षि बाल्मीकिजी ने वाल्मीकि रामायण में इस प्रकार किया है–

काले वर्षति पर्जन्यः सुमिक्षं विमला दिशिः।

हृष्ट पुष्ट जनाकीर्ण पुरै जनपदस्तथा।। [3]

अर्थात् श्री राम के राज्य में मेध समय पर वर्षा करते थे। सदा सुकाल ही रहता था, कभी अकाल नहीं पड़ता था। सम्पूर्ण दिशाएं प्रसन्न दिखायी देती थी तथा नगर और जनपद हृष्टपुष्ट मनुष्यों से भरे रहते थे।

महर्षि वेदव्यास और रामराज्य की स्थापना :– महर्षि वेदव्यास ने अध्यात्म रामायण में रामराज्य का वर्णन इस प्रकार किया है–

राघवे शासति भुवं लोकनाथे रमापतौ।

वसुधा सस्यसम्पन्ना फलवन्तश्र भरूहाः।। [4]

अर्थात् भगवान त्रिलोकीनाथ राम के शासन काल में पृथ्वी धन धान्य से परिपूर्ण वृक्षादि फलों से सम्पन्न थे।

जनाः धर्मपराः सर्वेपति भक्ति पराः स्त्रियः।

नापस्यत्पुत्रमरणं कश्रिदाजिनि राघवे।। [5]

अर्थात् श्री रघुरनाथ जी के राज्य में समस्त पुरूष धर्म परायण थे, स्त्रियां पति सेवा में तत्पर रहती थीं और किसी को भी अपने पुत्र का मरण देखने को नहीं मिलता था।

कोटिशः स्थापयामास शिवलिंगानि सर्वशः।

सीता च रमयामास सर्वभोगोरे मानुर्षः ।। [6]

अर्थात् पर धार्मिक भगवान राम धैर्य पूर्वक राज्य शासन करते रहे, और उन्होंने सम्पूर्ण लोकों के पाप दूर करने वाली अपनी पवित्र कीर्ति कथा संसार में स्थापित की।

शशास रामो धर्मेणं राज्यं परम धर्म वित् ।

कथा संस्थापयामास सर्व लोककमला पहाम् ।। [7]

अर्थात् तीनों लोक जिनके चरण कमलों की वन्दना करते हैं, और उन माया मानव शरीरधारी श्री राम चन्द्र जी विधि पूर्वक दस हजार वर्षों तक शासन किया।

गास्वामी तुलसीदास और रामराज्य की स्थापना – गोस्वामी तुलसीदास अपने राम चरित मानस में रामराज्य का वर्णन इस प्रकार किया है–

रामराज्य बैठे त्रिलोका , हरिषित भए गए सब सोका।

वयरू न कर काहू सम कोई, राम प्रताप विषमता खोई।। [8]

अर्थात् राम के सिंहासन पर बैठते ही तीनो लोक प्रसन्न हो गये। कोई किसी से बैर नहीं करता था। श्री राम के प्रताप से सबसे मन की विषमता दूर हो गयी।

दैहिक दैविक भौतिक तापा रामराज्य काहु नहिं व्यापा।

सब नर करहिं परस्पर प्रीती, चलहिं स्वधर्म निरति श्रुति नीती।। [9]

अर्थात् रामराज्य में किसी को शारीरिक कष्ट , दैवीय कष्ठ और सांसारिक कष्ट नहीं व्यापते थे सब लोग आपस में प्रेम करते और वेद की रीति से अपने धर्म में मन लगाकर चलते है।

चरिउ चरन धर्म जग माही, पूरि रहा सपनेहुँ अधनाहीं।

राम भगति रत नर उर नारी , सकल परम गति के अधिकारी।। [10]

अर्थात् राम के राज्य में चारों चरण पूर्णरूप से विद्यमान थे। पाप तो स्वप्न मे भी नहीं है। सब नर नारी श्री राम की भक्ति मन से करते थे, और सब लोग ही मुक्ति के अधिकारी थे।

अल्पमृत्यु नहिं कबनिउ पीरा, सब सुन्दर सब विरूज शरीरा।

नहिं दरिद्र कोउ दुःखी न दीना, नहि कोउ अबुध न लक्षण हीना।। [11]

अर्थात् रामजी के राज्य में अकाल मृत्यु नहीं होती थी, और न अज्ञानी और न किसी को पीड़ा होती थी, न कोई दरिद्र था, न कोई दुःखी था और न अज्ञानी और न कोई शुभ लक्षणों से हीन था बल्कि सभी शुभ लक्षणों से युक्त थे।

मूल्यांकन :– प्रस्तुत लेख में शोधार्थिनी ने राम जन्म और राम के वनगमन , शूपण खॉ के अंगभग साथ ही खर दूषण वध की कथा का वृतान्त प्रस्तुत किया है । लंका के राजा रावण के वध के पश्चात जिस समृद्ध रामराज्य की स्थापना की गयी उसमें महर्षि वाल्मीकि और व्यास मुनि तथा गोस्वामी तुलसीदास ने अपने ग्रन्थों में जिस प्रकार वर्णन किया है उससे समाज और समाज में नैतिक वातावरण पैदा करने की पहल की । शायद रामराज्य फिर से आ जाय तो मेरे देश का कल्याण अवश्यंभावी हैं

महत्वपूर्ण शब्द :– ***राम , लक्ष्मण, सीता, खर, दूषण, शूपनखॉ, महर्षि बाल्मीकि, व्यास मुनि, गोस्वामी तुलसी दास तथा रामराज्य।***

संदर्भ ग्रन्थ :–

1. *रामचरित मानस, बालकाण्ड, 176–2*
2. *बाल्मीकि रामायण – अरण्यकाण्ड– सर्ग सख्या–30 श्लोक–1 से 25*
3. *बाल्मीकि रामयण, उत्तरकाण्ड , सर्ग सं0 9 श्लोक –13*
4. *अध्यात्म रामायण – उत्तरा काण्ड –सर्ग सं0– 4, श्लोक– 21*
5. *अध्यात्म रामायण –उत्तरकाण्ड –सर्ग सं0 –4 श्लोक –22*
6. *अध्यात्म रामायण – उत्तर काण्ड –श्लोक –1*
7. *अध्यात्म रामायण – उत्तर काण्ड– श्लोक –20*
8. *अध्यात्म रामायण –उत्तरकाण्ड– सर्ग सं0–4 श्लोक –28*
9. *अध्यात्म रामायण – उत्तर काण्ड – श्लोक –1*
10. *राम चरित मानस – उत्तर काण्ड – श्लोक सं– 1*
11. *रामचरित मानस – उत्तर काण्ड– श्लोक सं0–2*